इकाई : 2

समाजवाद एवं साम्यवाद

समाजवाद एक ऐसी विचारधारा है जिसने आधुनिक काल में समाज को एक नया आवाम दिया । उन्नीसवीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप समाज में पूँजीपति वर्गों द्वारा मजदूरों का लगातार शोषण अपने चरमोत्कर्ष पर था । उन्हें इस शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने तथा वर्ग विहीन समाज की स्थापना करने में समाजवादी विचारधारा ने अग्रणी भूमिका अदा की । समाजवाद उत्पादन में मुख्यत: निजी स्वामित्व की जगह सामूहिक स्वामित्व या धन के समान वितरण पर जोर देता है । यह एक शोषण उन्मुक्त समाज की स्थापना चाहता है। अतः समाजवादी व्यवस्था एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जिसके अन्तर्गत उत्पादन के सभी साधनों, कारखानों तथा विपणन में सरकार का एकाधिकार हो । ऐसी व्यवस्था में उत्पादन निजी लाभ के लिए न होकर सारे समाज के लिए होता है ।

समाजवाद की उत्पत्ति :

समाजवादी भावना का उदय मूलत: 18 वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप हुआ था । औद्योगिक क्रांति ने सभी देशों की आर्थिक व्यवस्था में आमूल परिवर्त्तन कर दिया था । कुटीर उद्योग धंधों के स्थान पर विशाल पैमाने पर बड़े उद्योगों के मशीनीकरण तथा पूँजीवादी भावना के विकास के फलस्वरूप यूरोप के विभिन्न देशों में धीरे-धीरे पूँजीपतियों के निहित स्वार्थों और मिल-मालिकों की श्रमिक विरोधी नीतियों के कारण सभी देशों के श्रमिकों का जीवन नारकीय बन गया था। उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति निरन्तर गिरने लगी थी । श्रमिकों को कोई अधिकार नहीं था और उनका क्रूर शोषण हो रहा था ।

इस प्रकार औद्योगिक क्रांति से प्रभावित देशों नें दो परस्पर विरोधी तथ्य एक साथ दिखाई पड़ रहे थे। प्रथम, पूँजीवादी व्यवस्था दिन-प्रतिदिन मजबूत होती जा रही थी। मध्यम वर्ग आर्थिक

दृष्टि से निरन्तर समृद्धशाली होता जा रहा था। द्वितीय, श्रमिकों की आर्थिक स्थिति का तेजी से पतन हो रहा था। इस प्रकार उत्पादन की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण घटक भूखे मरने को बाध्य था। मजदूरों को अपने श्रम-संगठन बनाने का भी अधिकार नहीं था। मजदूर वर्ग पूरी तरह पूँजीपतियों की दया पर जीवित था। इस प्रकार कहा जा सकता है कि आर्थिक दृष्टि से समाज का विभाजन दो वर्गों में हो गया था-

(1) पूँजीपति वर्ग (2) श्रमिक वर्ग

जिस समय श्रमिक जगत आर्थिक दुर्दशा और सामाजिक पतन की स्थिति से गुजर रहा था, उसी समय श्रमिकों को कुछ महत्वपूर्ण राष्ट्र-भक्तों, विचारकों और लेखकों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इन व्यक्तियों ने सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में एक नवीन विचारधारा का प्रतिपादन किया जिसे 'समाजवाद' के नाम से जाना जाता है। इन विचारकों में सेन्ट साइमन, फौरियर, लुई ब्लां, राबर्ट ओवन, कार्ल मार्क्स एवं एंगेल्स का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन महान विचारकों ने यूरोपीय देशों में प्रचलित आर्थिक व्यवस्था की कड़ी आलोचना की तथा औद्योगिक संगठन और पूँजीपतियों एवं श्रमिकों के पारस्परिक सम्बन्धों के विषय में नवीन सिद्धांतों का प्रतिपादन किया।

ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिक समाजवाद का विभाजन दो चरणों में किया जाता है- मार्क्स से पूर्व का समाजवाद एवं मार्क्स के पश्चात् का समाजवाद। मार्क्सवादी विचारकों ने इन्हें क्रमशः यूटोपियन एवं वैज्ञानिक समाजवाद का नाम दिया। यूटोपियन समाजवादियों की दृष्टि आदर्शवादी थी तथा उनके कार्यक्रम की प्रकृति अव्यवहारिक थी। अधिकतर यूटोपियन विचारक फ्रांसीसी थे जो क्रांति के बदले शांतिपूर्ण परिवर्तन में विश्वास रखते थे अर्थात वे वर्ग संघर्ष के बदले वर्ग समन्वय के हिमायती थे।

यूटोपियन समाजवादी :

प्रथम यूटोपियन (स्वप्नदर्शी) समाजवादी, जिसने समाजवादी विचारधारा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, एक फ्रांसीसी विचारक सेंट साइमन था। उसका मानना था कि राज्य एवं समाज को इस ढंग से संगठित करना चाहिए कि लोग एक दूसरे का शोषण करने के बदले मिलजुल कर प्रकृति का दोहन करें, समाज को निर्धन वर्ग के भौतिक एवं नैतिक उत्थान के लिए कार्य करना चाहिए। उसने घोषित किया 'प्रत्येक को उसकी क्षमता के अनुसार तथा प्रत्येक को उसके कार्य के अनुसार'। आगे यही समाजवाद का मूलभूत नारा बन गया।

एक अन्य महत्वपूर्ण यूटोपियन विचारक चार्ल्स फौरियर था। वह आधुनिक औद्योगिकवाद

का विरोधी था तथा उसका मानना था कि श्रमिकों को छोटे नगर अथवा कस्बों में काम करना चाहिए। उसने किसानों के लिए एक फ्लांग्स बनाए जाने की योजना रखी। परन्तु यह योजना असफल हुई।

फ्रांसीसी यूटोपियन चिंतकों में एकमात्र व्यक्ति जिसने राजनीति में भी हिस्सा लिया, लुई ब्लां था। उसके सुधार कार्यक्रम अधिक व्यावहारिक थे। उसका मानना था कि आर्थिक सुधारों को प्रभावकारी बनाने के लिए पहले राजनीतिक सुधार आवश्यक है।

फ्रांस से बाहर सबसे महत्वपूर्ण यूटोपियन चिन्तक ब्रिटिश उद्योगपति रार्बट ओवन था। उसने स्काटलैण्ड के न्यू लूनार्क नामक स्थान पर एक फैक्ट्री की स्थापना की थी। इस फैक्ट्री में उसने श्रमिकों को अच्छी वैतनिक सुविधाएँ प्रदान की और फिर उसने ऐसा महसूस किया कि मुनाफा कम होने के बजाए और भी बढ़ गया था। अतः वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि संतुष्ट श्रमिक ही वास्तविक श्रमिक है।

राबर्ट ओवन

परंतु उपर्युक्त चिंतकों ने प्रबुद्ध चिन्तकों की तरह मानव की मूलभूत अच्छाई एवं जगत की पूर्णता में विश्वास किया। इन्होंने वर्ग संघर्ष के बदले वर्ग समन्वय पर बल दिया। फिर भी, इन चिंतकों का अपना योगदान है। प्रथम, ये आरंभिक चिंतक है जिन्होंने पूँजी और श्रम के बीच संबंधों की समस्या का निराकरण करने का प्रयास किया। दूसरे, मार्क्स ने इनकी विफलता से सबक लिया और फिर वह इनसे आगे बढ़ गया।

कार्ल मार्क्स (1818-1883) :

कार्ल मार्क्स का जन्म 5 मई, 1818 ई० को जर्मनी में राइन प्रांत के ट्रियर नगर में एक यहूदी परिवार में हुआ था। कार्ल मार्क्स के पिता हेनरिक मार्क्स एक प्रसिद्ध वकील थे, जिन्होंने बाद में चलकर ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया था। मार्क्स ने बोन विश्वविद्यालय में विधि की शिक्षा ग्रहण की परन्तु 1836 में वे बर्लिन विश्वविद्यालय चले आये, जहाँ उनके जीवन को एक नया मोड़ मिला । मार्क्स हीगल के विचारों से प्रभावित था । 1843 में उसने बचपन की मित्र जेनी से विवाह किया। उसने राजनीतिक एवं सामाजिक इतिहास पर मांण्टेस्क्यू तथा रूसो के विचारों का

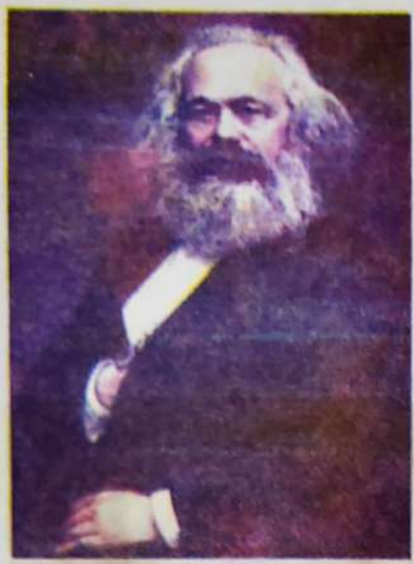

कार्ल मार्क्स

गहन अध्ययन किया। कार्ल मार्क्स की मुलाकात पेरिस में 1844 ई० में फ्रेडरिक एंगेल्स से हुई जिससे जीवन भर उसकी गहरी मित्रता बनी रही। एंगेल्स के विचारों एवं रचनाओं से प्रभावित होकर मार्क्स ने भी श्रमिक वर्ग के कष्टों एवं उसकी कार्य की दशाओं पर गहन विचार करना आरंभ कर दिया। मार्क्स ने एंगेल्स के साथ मिलकर 1848 ई० में एक 'साम्यवादी घोषणा पत्र' प्रकाशित किया जिसे आधुनिक समाजवाद का जनक कहा जाता है। उपर्युक्त घोषणा पत्र में मार्क्स ने अपने आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है। मार्क्स विश्व के उन गिने-चुने चिंतकों में एक है, जिसने इतिहास की धारा को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। मार्क्स ने 1867 ई० में 'दास-कैपिटल' नामक पुस्तक की रचना की जिसे "समाजवादियों की बाइबिल" कहा जाता है।

मार्क्स के सिद्धांत :

1. द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धांत
2. वर्ग-संघर्ष का सिद्धांत
3. इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या
4. मूल्य एवं अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत
5. राज्यहीन व वर्गहीन समाज की स्थापना

ऐतिहासिक भौतिकवाद :

कार्ल मार्क्स के द्वारा इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या प्रस्तुत की गई। उसने कहा कि इतिहास उत्पादन के साधन पर नियंत्रण के लिए दो वर्गों के बीच चल रहे निरंतर संघर्ष की कहानी है। उसके अनुसार इतिहास की प्रत्येक घटना एवं परिवर्त्तन के मूल में आर्थिक शक्तियाँ हैं। उत्पादन प्रणाली के प्रत्येक परिवर्त्तन के साथ सामाजिक संगठन में भी परिवर्त्तन हुआ। इतिहास

के पाँच चरण अब तक दृष्टिगोचर है और छठा चरण आने वाला है। इस प्रकार कार्ल मार्क्स के अनुसार निम्नलिखित छः ऐतिहासिक चरण हैं।

(i) आदिम साम्यवादी युग (Age of Primitive Communism)

(ii) दासता का युग (Slave age)

(iii) सामन्ती युग (Feudal age)

(iv) पूँजीवादी युग (Capitalist age)

(v) समाजवादी युग (Socialist age)

(vi) साम्यवादी युग (Communist age)

मार्क्स तथा प्रथम अंतरराष्ट्रीय संघ :

समाजवादी आंदोलन के इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना थी 1864 में प्रथम अंतरराष्ट्रीय संघ (First International) की स्थापना। इस संघ की स्थापना का श्रेय मार्क्स को है। अपने उद्‌घाटन भाषण में मार्क्स ने मजदूरों को महत्वपूर्ण बात समझाने की चेष्टा की और कहा कि - वे अपनी मुक्ति स्वयं ही और अपने प्रयत्नों द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं। जब तक कि उत्पादन के साधनों का स्वामित्व व्यक्तिगत हाथों में है तब तक मशीनों का सुधार, उद्योग में विज्ञान के प्रयोग और उत्पादन कला में किसी भी सुधार से श्रमिकों की स्थिति में कोई सुधार नहीं हो सकता इसलिए उनका अंतिम लक्ष्य पूँजीवाद का विनाश होना चाहिए। इस सम्मेलन में नारा बुलंद किया गया- 'अधिकार के बिना कर्त्तव्य नहीं और कर्त्तव्य के बिना अधिकार नहीं'।

द्वितीय अंतरराष्ट्रीय संघ (Second international) :

विभिन्न देशों के समाजवादी दलों को एक अंतरराष्ट्रीय संगठन के तहत सूत्रबद्ध करने के लिए 14 जुलाई 1889 को पेरिस में एक सम्मेलन हुआ, जिसमें बीस देशों के 400 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसे द्वितीय अंतरराष्ट्रीय संघ के नाम से जाना जाता है। इस संघ की स्थापना मार्क्सवादी समाजवाद के तेजी से फैलने का द्योतक था। इस सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया

कि प्रत्येक वर्ष एक मई का दिन मजदूर वर्ग की एकता दिवस के रूप में मनाया जायेगा। मजदूरों के लिए आठ घंटे के कार्य-दिवस की माँग किया जाना भी तय किया गया। इसका अंतरराष्ट्रीय सचिवालय ब्रूसेल्स में स्थापित किया गया। 1 मई 1890 को सारे यूरोप और अमेरिका में लाखों मजदूरों ने हड़ताल और प्रदर्शन किया, तब से 1 मई, अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस के रूप में सारे संसार में मनाया जाता है। द्वितीय अंतरराष्ट्रीय संघ की सबसे बड़ी उपलब्धि थी- सैन्यवाद एवं युद्ध के विरुद्ध आंदोलन तथा सभी राष्ट्रों की बुनियादी समानता तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता के उनके अधिकार पर जोर।

इस प्रकार समाजवादी आंदोलन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत आधार मिलने पर श्रमिकों में विश्वास एवं इस आशा का संचार हुआ कि इतिहास उनकी तरफ है तथा भविष्य में एक ऐसे संसार का निर्माण होना है, जो शोषण एवं उत्पीड़न से मुक्त होगा।

1917 की बोल्शेविक क्रांति :

जार निकोलस II

बीसवीं शताब्दी के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना रूस की क्रांति थी। इस क्रांति ने रूस के सम्राट अथवा जार के एकतंत्रीय निरंकुश शासन का अंत कर मात्र लोकतंत्र की स्थापना का ही प्रयत्न नहीं किया, अपितु सामाजिक, आर्थिक और व्यवसायिक क्षेत्रों में कुलीनों, पूँजीपतियों और जमींदारों की शक्ति का अंत किया तथा मजदूरों और किसानों की सत्ता को स्थापित किया।

रूस की बोल्शेविक क्रांति सही मायने में नवंबर 1917 ई० में सम्पन्न हुई। इस क्रांति ने एक नई राजनीतिक सामाजिक व्यवस्था-साम्यवाद-का आदर्श उपस्थित करने के साथ-साथ विश्व में सर्वप्रथम सर्वहारा वर्ग की सत्ता की स्वीकृति का भी प्रयास किया।

इस क्रांति के निम्नलिखित कारण थे:-

रूस का मानचित्र

1. जार की निरंकुशता एवं अयोग्य शासन :

1917 से पूर्व रूस में रोमनोव-राजवंश का शासन था। इस समय रूस के सम्राट को 'जार' कहा जाता था। रूस में एक कठोर राजनीतिक संरचना स्थापित थी। 19 वीं सदी के मध्य तक यूरोप की राजनीतिक संरचना परिवर्तित हो चुकी थी तथा राजतंत्र की शक्ति सीमित की जा चुकी थी। परंतु रूसी राजतंत्र अपना विशेषाधिकार छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। जार निकोलस II, जिसके शासनकाल में क्रांति हुई, राजा के दैवी अधिकारों में विश्वास रखता था। उसे आम लोगों की सुख-दुख की कतई चिंता नहीं थी। जार ने जो अफसरशाही बनायी थी वह अस्थिर, जड़ और अकुशल थी। नियुक्ति का आधार योग्यता नहीं थी। अतः गलत सलाहकारों के कारण जार की स्वेच्छाचारिता बढ़ती गई और जनता की स्थिति बद से बदतर होती गई।

2. कृषकों की दयनीय स्थिति :

रूस में जनसंख्या का बहुसंख्यक भाग कृषक ही थे, परन्तु उसकी स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। 1861 ई० में जार एलेक्जेंडर द्वितीय के द्वारा कृषि दासता समाप्त कर दी गई थी, परन्तु इससे किसानों की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ था। उनके खेत बहुत छोटे-छोटे थे, जिन पर वे पुराने ढंग से खेती करते थे। उनके पास पूँजी का भी अभाव था तथा करों के बोझ से वे दबे हुए थे। ऐसे में किसानों के पास क्रांति के सिवाय कोई चारा नहीं था।

3. मजदूरों की दयनीय स्थिति :

रूस में मजदूरों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। उन्हें अधिक काम करना पड़ता था परन्तु उनकी मजदूरी काफी कम थी। उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता था। अतः वे अपनी स्थिति से संतुष्ट नहीं थे। मजदूरों को कोई राजनैतिक अधिकार नहीं थे। अपनी मांगों के समर्थन में वे हड़ताल भी नहीं कर सकते थे। मार्क्स के ये शब्द कि 'मजदूरों के पास सिवाय अपनी बेड़ियों के खोने के लिए कुछ भी नहीं है; उनकी दशा का सही चित्रण करता है।'

4. औद्योगीकरण की समस्या :

रूसी औद्योगीकरण पश्चिमी पूँजीवादी औद्योगीकरण से भिन्न था। यहाँ कुछ ही क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उद्योगों का संकेद्रण था। यहाँ राष्ट्रीय पूँजी का अभाव था। अतः उद्योगों के विकास के लिए विदेशी पूँजी पर निर्भरता बढ़ गई थी। विदेशी पूँजीपति आर्थिक शोषण को बढ़ावा दे रहे थे। अतः चारों ओर असंतोष व्याप्त था।

5. रूसीकरण की नीति :

सोवियत रूस विभिन्न राष्ट्रीयताओं का देश था। यहाँ मुख्यतः स्लाव जाति के लोग रहते थे। इनके अतिरिक्त फिन, पोल, जर्मन, यहूदी आदि अन्य जातियों के लोग भी थे। ये भिन्न-भिन्न भाषा बोलते थे तथा इनका रस्म-रिवाज भी भिन्न-भिन्न था। परन्तु रूस के अल्पसंख्यक समूह जार-निकोलस द्वितीय द्वारा जारी की गई रूसीकरण की नीति से परेशान था। इसके अनुसार जार ने देश के सभी लोगों पर रूसी भाषा, शिक्षा और संस्कृति लादने का प्रयास किया। इससे अल्पसंख्यकों में हलचल मच गई। 1863ई० में इस नीति के विरुद्ध पोलो ने विद्रोह किया तो उनका निर्दयतापूर्वक दमन किया गया। इस प्रकार रूसी राजतंत्र के प्रति उनका आक्रोश बढ़ता जा रहा था।

6. विदेशी घटनाओं का प्रभाव :

(i) **क्रीमिया का युद्ध :** रूस की क्रांति में विदेशी घटनाओं की भूमिका भी अत्यधिक महत्वपूर्ण थी। सर्वप्रथम क्रीमिया के युद्ध में रूस की पराजय ने उस देश में सुधारों का युग आरम्भ किया। तत्पश्चात 1904-05 के रूस-जापान युद्ध ने रूस में पहली क्रांति को जन्म दिया और अंततः प्रथम विश्व युद्ध में बोल्शेविक क्रांति का मार्ग प्रशस्त हुआ ।

(ii) जापान से पराजय तथा 1905 की क्रांति:- 1905 के ऐतिहासिक रूस-जापान युद्ध में रूस बुरी तरह पराजित हुआ। इससे पूर्व निरंकुश जारशाही विभिन्न मोर्चों पर अपनी विफलताओं को रूसी जनता से छिपाती रही। लेकिन उसके लिए सुदूर पूर्व की पराजय को जनता से छिपाना मुश्किल था। बचे-खुचे फटेहाल सैनिक जब वापस लौटे तो सारा देश स्तब्ध था। महानता का भ्रम टूट चुका था। रूस एशिया के छोटे से देश से पराजित हुआ था। वस्तुत: इस पराजय के कारण 1905 ई० में रूस में क्रांति हो गई। 9 जनवरी 1905 को लोगों का समूह 'रोटी दो' के नारे के साथ सड़कों पर प्रदर्शन करते हुए सेंट पीटर्सवर्ग स्थित महल की ओर जा रहा था। परन्तु जार की सेना ने इस निहत्थे लोगों पर गोलियाँ बरसाई जिसमें हजारों लोग मारे गये इसलिए 22 जनवरी (पुराने कैलेंडर में 9 जनवरी 1905) को खूनी रविवार (लाल रविवार) के नाम से जाना जाता है। इस नरसंहार की खबर सुनकर पूरे रूस में सनसनी फैल गई। इस क्रांति में किसानों की व्यापक भागीदारी हुई। अंत में सरकार झुक गई तथा 1905

सेन्ट पीटर्सबर्ग

ड्यूमा

ई० में एक प्रतिनिध्यात्मक संस्था ड्यूमा का गठन हुआ। परन्तु 1906 ई० तक जैसे ही क्रांति की शक्ति कमजोर हुई, रूसी राजतंत्र ने ड्यूमा के कुछ अधिकार छिन लिए। यद्यपि 1905 की क्रांति विफल रही, परन्तु भीतर ही भीतर आग सुलगती रही जो 1917 ई० में एक महान क्रांति के रूप में प्रकट हुई।

7. रूस में मार्क्सवाद का प्रभाव तथा बुद्धिजीवियों का योगदान :

रूस की क्रांति से पूर्व एक वैचारिक क्रांति भी देखी जा सकती थी। लियो टॉलस्टाय (रचना-वार एंड पीस) दोस्तोवस्की, तुर्गनेव जैसे चिंतक इस नए विचार को प्रोत्साहन दे रहे थे। रूस के औद्योगिक मजदूरों पर कार्ल मार्क्स के समाजवादी विचारों का पूर्ण प्रभाव था। मार्क्सवादियों ने मजदूरों के बीच काम करना शुरू कर दिया था तथा उनका संगठन भी बढ़ रहा था। रूस का पहला साम्यवादी प्लेखानोव था जो रूस में जारशाही की निरंकुशता समाप्त करके साम्यवादी व्यवस्था की स्थापना चाहता था। उसने 1898 ई० में रशियन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी की स्थापना की। यह साम्यवादी दल का पूर्ववर्ती था। शीघ्र ही 1903 ई० में साधन एवं अनुशासन के मुद्दे पर पार्टी में फूट पड़ गई। इसके परिणामस्वरूप बहुमतवाला दल 'बोल्शेविक' कहलाया और अल्पमतवाला दल 'मेनशेविक'। मेनशेविक मध्यवर्गीय क्रांति के पक्षधर थे पर, बोल्शेविक सर्वहारा क्रांति के पक्षधर थे। इसके अतिरिक्त 1901 ई० में 'सोशलिस्ट रिवोल्यूशनरी पार्टी' का गठन हुआ जो किसानों की माँगों को उठाती थी। इस प्रकार मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित मजदूर एवं किसानों का संगठन रूस की क्रांति का एक महान कारण साबित हुआ।

सर्वहारा वर्ग

समाज का वैसा वर्ग जिसमें किसान, मजदूर एवं आम गरीब लोग शामिल हैं।

8. तात्कालिक कारण-प्रथम विश्व युद्ध में रूस की पराजय :

प्रथम विश्व युद्ध 1914 से 1918 ई० तक चला। इस युद्ध में रूस भी मित्र राष्ट्रों की ओर से शामिल हुआ था। इस युद्ध में सम्मिलित होने का एकमात्र उद्देश्य था कि रूसी जनता आंतरिक असंतोष भूलकर बाहरी मामलों में उलझ जाए। परन्तु इस युद्ध में चारों तरफ रूसी सेनाओं की हार हो रही थी, न उनके पास अच्छे हथियार थे एवं न ही पर्याप्त भोजन की सुविधा थी। युद्ध के मध्य जार निकोलस II ने सेना का कमान अपने हाथों में ले लिया। परिणामस्वरूप दरबार खाली हो गया तथा उसकी अनुपस्थिति में जरीना (जारनिकोलस II की पत्नी) और उसके तथाकथित गुरु रासपुटिन (पादरी) को षड्यंत्र करने का मौका मिल गया, जिसके कारण राजतंत्र की प्रतिष्ठा और भी गिर गई।

मार्च की क्रांति एवं निरंकुश राजतंत्र का अंत :

7 मार्च 1917 ई० को (पुराने रूसी कैलेंडर के अनुसार 22 फरवरी, 1917) पेट्रोग्राड (वर्तमान लेनिनग्राद) की सड़कों पर किसान-मजदूरों ने जुलूस निकाला। उन्होंने "रोटी दो" के नारे लगाए। अगले दिन 8 मार्च को कपड़े की मिलों की महिला मजदूरों ने बहुत सारे कारखानों में 'रोटी' की मांग करते हुए हड़ताल का नेतृत्व किया, जिसमें अन्य मजदूर भी शामिल हो गए। जुलूस में लाल झंडों की भरमार थी। जब सेना की एक टुकड़ी से भीड़ पर गोली चलाने को कहा गया तो उसने भी विद्रोह कर दिया। अतः उससे हथियार छीनने पड़े। जार की सबसे विश्वस्त टुकड़ी **'प्रैओब्राशेंसकी रेजीमेंट** ने भी विद्रोह कर दिया। सैनिकों का विद्रोह बढ़ता गया। फलतः विवश होकर 12 मार्च 1917 को जार ने गद्दी त्याग दी। यह फरवरी की रूसी क्रांति थी क्योंकि पुराने रूसी कैलेंडर के अनुसार 27 फरवरी 1917 को यह घटना घटी थी। इस तरह रूस पर से रोमनोव-वंश का निरंकुश जारशाही का अंत हो गया। अब सर्वप्रथम लोबाव के नेतृत्व में 15 मार्च को एक बुर्जुआ सरकार का गठन हुआ। परंतु रूसी लोगों ने जिस स्वतंत्रता की आकांक्षा की थी, वह महज राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं थी वरन् आर्थिक एवं सामाजिक स्वतंत्रता भी थी। अतः यह बुर्जुआ सरकार तात्कालिक परिस्थितियों के प्रतिकूल थी। अंत में बुर्जुआ सरकार गिर गई तथा केरेंसकी के नेतृत्व में एक उदार समाजवादियों की सरकार गठित हुई। इस सरकार का मुख्य उद्देश्य जनतांत्रिक एवं वैधानिक सरकार की स्थापना करना, मित्रराष्ट्रों के सहयोग से युद्ध चलाना, व्यक्तिगत संपत्ति की रक्षा करना, संविधान-सभा द्वारा भूमि की समस्या सुलझाना एवं रूस की समस्त संस्थाओं में वैधानिक उपायों द्वारा परिवर्तन लाना था। किंतु, बोल्शेविकों ने इस सरकार को स्वीकार नहीं किया।

रूस क्राँति की तारीख :

रूस में 1 फरवरी 1918 तक जूलियन कैलेंडर का अनुसरण किया जाता था। इसके बाद रूसी सरकार ने ग्रेगोरियन कैलेंडर अपना लिया जिसका अब सब जगह इस्तेमाल किया जाता है। ग्रेगोरियन कैलेंडर जूलियन कैलेंडर से 13 दिन आगे चलता है। अतः इस प्रकार फरवरी क्रांति 12 मार्च को और अक्टूबर क्रांति 7 नवंम्बर को संपन्न हुई थी। इसी तरह 1905 की क्रांति 22 जनवरी को हुई थी।

सन् 1975 ई० में संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस घोषित किया गया।

बोल्शेविक क्रांति (नवम्बर 1917)

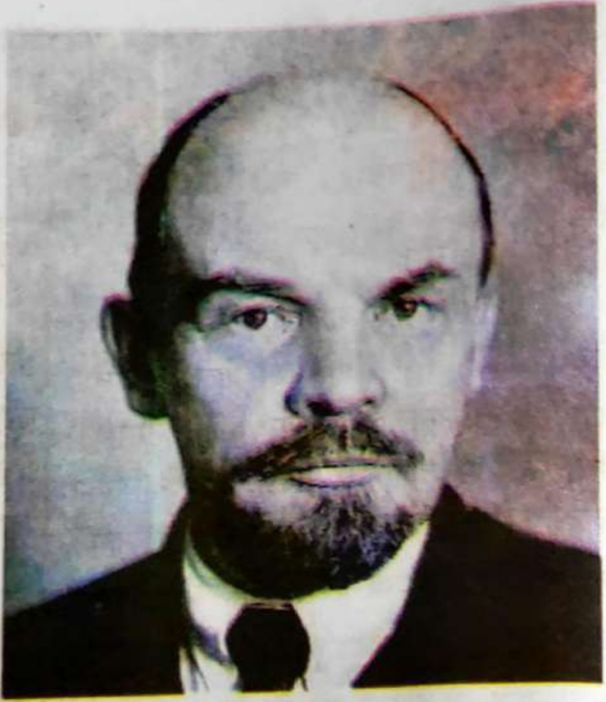

लेनिन

इसी समय रूस के राजनीतिक मंच पर लेनिन का प्रादुर्भाव हुआ । जार की सरकार ने उसे निर्वासित कर दिया था अतः वह स्वीटजरलैंड में निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहा था। जब मार्च 1917 ई० में क्रांति हुई, वह जर्मनी की सहायता से रूस पहुँचा। अप्रैल 1917 में जब वह पेट्रोग्राद पहुँचा, तब रूस की जनता का उत्साह बढ़ गया । लेनिन ने घोषित किया कि रूसी क्रांति पूरी नहीं हुई है, अतः एक दूसरी क्रांति अनिवार्य है। उसने बोल्शेविक दल का कार्यक्रम स्पष्ट किया जो,'अप्रैल थीसिस' के नाम से प्रसिद्ध है। लेनिन ने तीन नारे दिए-भूमि, शांति और रोटी। लेनिन ने बल प्रयोग द्वारा केरेन्सकी सरकार को उलट देने का निश्चय किया। सेना और जनता दोनों ने उसका साथ दिया। 7 नवम्बर 1917 ई० (पुराने रूसी कैलेंडर के अनुसार 25अक्टूबर, 1917) को बोल्शेविकों ने पेट्रोग्राद के रेलवे स्टेशन, बैंक, डाकघर, टेलीफोन-केंन्द्र, कचहरी तथा अन्य सरकारी भवनों पर अधिकार कर लिया। केरेन्सकी रूस छोड़कर भाग गया। इस प्रकार रूस की महान बोल्शेविक क्रांति (इसे अक्टूबर क्रांति कहते हैं) सम्पन्न हुई। अब शासन की बागडोर बोल्शेविकों के हाथ में आ गई जिसका अध्यक्ष लेनिन को बनाया गया तथा ट्राटस्की इस सरकार का विदेश मंत्री बना। विश्व में पहली बार शासन सत्ता सर्वहारा वर्ग के हाथों में आ गई।

सत्ता पर कब्जा करने के पश्चात् लेनिन और बोल्शेविक दल का उत्तरदायित्व और भी बढ़ गया। सत्ता में आने के बाद लेनिन के समक्ष कई जटिल समस्याएँ थीं। परन्तु उसने बहुत हद तक इन समस्याओं का निराकरण करने की कोशिश की। सर्वप्रथम उसने जर्मनी के साथ ब्रेस्टलिटोवस्क की संधि की। इस संधि में सोवियत रूस को लगभग एक चौथाई भू-भाग गवाँना पड़ा। परंतु लेनिन प्रथम विश्व युद्ध से बाहर हो गया तथा उसने अब आंतरिक समस्याओं पर अपना ध्यान केंद्रित किया। इसी समय रूस में गृहयुद्ध की समस्या भी उत्पन्न हुई। जिसमें अमेरिका, जापान, ब्रिटेन और फ्रांस ने

हस्तक्षेप करते हुए सोवियत रूस पर आक्रमण कर दिया, परन्तु लेनिन ने साहसपूर्वक इन विरोधियों का सामना किया। ट्रॉटस्की के नेतृत्व में एक विशाल लाल सेना गठित की गई । लाल सेना ने सफलतापूर्वक विदेशी हमले का सामना किया। दूसरी तरफ, आंतरिक विद्रोहों को दबाने के लिए 'चेका' नामक गुप्त पुलिस संगठन बनाया गया। यह अचानक छापा मार कर विद्राहियों को गिरफ्तार कर लेती थी। इस तरह, लेनिन आंतरिक विद्रोह को दबाने में सफल रहा।

लेनिन ने एक शक्तिशाली केंद्रीय सत्ता की स्थापना की । सन् 1918 में विश्व का पहला समाजवादी शासन स्थापित करने वाला देश रूस का नया संविधान बनाया गया। इसके द्वारा रूस का नाम 'सोवियत समाजवादी गणराज्यों का समूह' (**U.S.S.R.**) के रूप में परिवर्तित किया गया। लेनिन ने नए राज्य में प्रतिनिधि सरकार की व्यवस्था की। राजनैतिक संगठन के सबसे निचले स्तर पर 'सोवियत' नामक स्थानीय समितियाँ बनाई गयीं। सभी सोवियत के सदस्यों को मिलाकर एक राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन किया गया, जिसकी कार्यकारिणी शक्ति एक केंद्रीय समिति को सौंपा गया। लेनिन इस समिति का अध्यक्ष था। मंत्रिमंडल के सदस्यों का चुनाव इसी समिति के द्वारा होना निश्चित हुआ ।

लेनिन के नये संविधान के द्वारा 18 वर्ष से अधिक उम्रवाले वैसे सभी नागरिकों को मताधिकार प्रदान किया गया जो उत्पादक श्रम द्वारा अपनी जीविका चलाते थे। इस तरह काम करने के

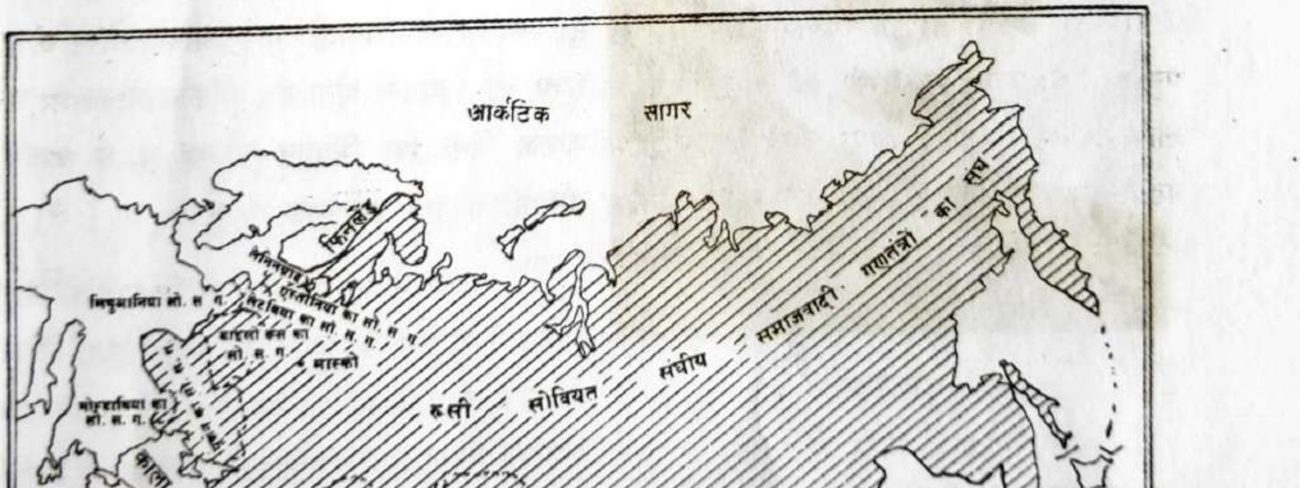

सोवियत समाजवादी गणराज्यों का संघ

अधिकार को संवैधानिक अधिकार बनाया गया। उत्पादन के साधन पर निजी स्वामित्व समाप्त कर दिया गया और उद्योगों पर मजदूरों का नियंत्रण स्थापित किया गया। बैंकों, बड़े-बड़े उद्योगों, जल, परिवहन एवं रेलवे का राष्ट्रीयकरण किया गया। शिक्षा पर से चर्च का अधिकार समाप्त कर उसका भी राष्ट्रीयकरण कर दिया गया।

इसी तरह लेनिन ने शासन के नियमों में परिवर्त्तन करने के साथ ही बोल्शेविक दल का नाम बदलकर साम्यवादी दल कर दिया और लाल रंग के झंडे पर हँसुए और हथौड़े को सुशोभित कर देश का राष्ट्रीय झंडा तैयार किया गया। उसके बाद से यह झंडा साम्यवाद का प्रतीक बन गया।

ट्रॉटस्की

अब लेनिन के समक्ष एक अन्य समस्या भूमि के पुनर्वितरण की थी। उसने एक आदेश जारी किया जिसके तहत बड़े भूस्वामियों की भूमि किसानों के बीच पुनर्वितरित किया गया। हालांकि किसानों ने भूमि पर पहले से ही कब्जा जमा रखा था। इस आदेश द्वारा लेनिन ने उसे सिर्फ वैधता प्रदान की। लेनिन के इस कदम की आलोचना हुई क्योंकि समाजवादी अर्थव्यवस्था में भूमि पर राज्य का नियंत्रण होता है। लेकिन लेनिन ने यह जवाब दिया कि किसान बहुमत में थे जबकि बोल्शेविक दल अल्पमत में था।

उत्पादन की समस्या के निपटारे के लिए लेनिन ने युद्धरत साम्यवाद को लागू किया। लेनिन ने इसके तहत फैक्ट्री के तकनीकविदों पर नियंत्रण स्थापित किया एवं मजदूरों की सहायता से फैक्ट्री के उत्पादन पर भी नियंत्रण स्थापित किया। इसी तरह किसानों पर भी नियंत्रण लगाया गया एवं किसानों से बलपूर्वक अनाजों की वसूली की जाने लगी । फैक्ट्री में श्रमिक हड़ताल पर कड़ाई से प्रतिबंध लगाया गया। परन्तु युद्धरत साम्यवाद के विरुद्ध रूस में भयंकर प्रतिक्रिया हुई। जबर्दस्ती वसूली के भय से किसानों ने अपना अनाज जलाना शुरू किया। परिणामतः 1920-21 में उत्पादन

का स्तर काफी गिर गया। करोड़ों लोगों के सामने जीवन-मरण का प्रश्न आ खड़ा हुआ। कहीं-कहीं तो भुखमरी की स्थिति पैदा हो गई। राजकीय और विदेशी सहायता के बावजूद काफी लोग भूख और प्यास से मरने लगे। क्रांति विरोधी नारे भी सुनाई पड़ने लगे। अतः लेनिन ने अपनी नीति में संशोधन किया जिसका परिणाम था-नई आर्थिक नीति (NEP) ।

नई आर्थिक नीति (NEP)
[NEW ECONOMIC POLICY]

लेनिन एक स्वप्नदर्शी विचारक नहीं, बल्कि वह एक कुशल सामाजिक चिंतक तथा व्यावहारिक राजनीतिज्ञ था। उसने यह स्पष्ट देखा कि तत्काल पूरी तरह समाजवादी व्यवस्था लागू करना या एक साथ सारी पूँजीवादी दुनिया से टकराना संभव नहीं है, जैसा कि ट्रॉटस्की चाहता था। इसलिए 1921 ई० में उसने एक नई नीति की घोषणा की जिसमें मार्क्सवादी मूल्यों से कुछ हद तक समझौता करना पड़ा। लेकिन वास्तव में पिछले अनुभवों से सीखकर व्यावहारिक कदम उठाना इस नीति का लक्ष्य था। नई आर्थिक नीति में निम्नांकित प्रमुख बातें थीं-

1. किसानों से अनाज ले लेने के स्थान पर एक निश्चित कर लगाया गया। बचा हुआ अनाज किसान का था और वह इसका मनचाहा इस्तेमाल कर सकता था।
2. यद्यपि यह सिद्धांत कायम रखा गया कि जमीन राज्य की है फिर भी व्यवहार में जमीन किसान की हो गई।
3. 20 से कम कर्मचारियों वाले उद्योगों को व्यक्तिगत रूप से चलाने का अधिकार मिल गया।
4. उद्योगों का विकेन्द्रीकरण कर दिया गया। निर्णय और क्रियान्वयन के बारे में विभिन्न इकाइयों को काफी छूट दी गई।
5. विदेशी पूँजी भी सीमित तौर पर आमंत्रित की गई।
6. व्यक्तिगत संपत्ति और जीवन की बीमा भी राजकीय ऐजेंसी द्वारा शुरू किया गया।
7. विभिन्न स्तरों पर बैंक खोले गए।
8. ट्रेड यूनियन की अनिवार्य सदस्यता समाप्त कर दी गई।

इस नई आर्थिक नीति के द्वारा लेनिन ने उत्पादन की कमी को नियंत्रित किया। इसके परिणामस्वरूप कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई। हालांकि लेनिन की इस नीति की आलोचना की जाती है लेकिन लेनिन ने इसका जवाब देते हुए कहा कि तीन कदम आगे बढ़कर एक कदम पीछे हटना-फिर भी दो कदम आगे रहने के समान है।

स्टालिन

1924 ई० में जब लेनिन की मृत्यु हुई तो उत्तराधिकार की समस्या आ खड़ी हुई। विभिन्न समूहों और अलग-अलग नेताओं के बीच सत्ता के लिए गंभीर संघर्ष चल रहे थे। इस संघर्ष में स्टालिन की विजय हुई। 1929 ई० में ट्रॉटस्की को निर्वासित कर दिया गया। 1930 के दशक में लगभग वे सभी नेता खत्म कर दिए गए जिन्होंने क्रांति में और उसके बाद के वर्षों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। राजनीतिक लोकतंत्र तथा भाषण और प्रेस की स्वतंत्रता नष्ट हो गयी। पार्टी के अन्दर भी मतभेदों को बर्दाश्त नहीं किया जाता था। स्टालिन कम्युनिस्ट पार्टी का महासचिव था और 1953 ई० में अपनी मृत्यु तक तानाशाही व्यवहार करता रहा। इन घटनाओं का सोवियत संघ में समाजवाद के निर्माण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा और इसमें ऐसी विशेषताएँ उभरी जो मार्क्सवाद और क्रांति के मानवतावादी आदर्शों के विपरीत थी। स्वतंत्रता के सीमित हो जाने के कारण कला और साहित्य के विकास पर भी विपरीत प्रभाव पड़ा।

परन्तु दूसरी ओर स्टालिन के अथक प्रयास से रूस विश्व के मानचित्र पर एक शक्तिशाली देश के रूप में सामने आया। तीन पंचवर्षीय योजनाओं के फलस्वरूप रूस की औद्योगिक उन्नति शिखर पर पहुँच गई। कृषि का आधुनिकीकरण हुआ तथा विज्ञान की उन्नति हुई। द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त होने से पहले ही रूस को एक महान शक्ति माना जाने लगा था। युद्धकाल के सम्मेलनों में रूजवेल्ट और चर्चिल के साथ स्टालिन भी भाग लेता था, इस प्रकार तीन दशकों में ही तिरस्कृत, आक्रांत और कमजोर रूस विश्व की महान् शक्ति बन गया और वहाँ की मेहनतकश जनता में क्रांति ने स्थायी रूप से अपनी जड़े जमा ली।

रूसी क्रांति का प्रभाव

1. इस क्रांति के पश्चात् श्रमिक अथवा सर्वहारा वर्ग की सत्ता रूस में स्थापित हो गई तथा इसने अन्य क्षेत्रों में भी आंदोलन को प्रोत्साहन दिया।

> **मिखाइल गोर्वाचोव 1985 ई० में राष्ट्रपति बने। इन्होंने पेरेस्त्रेइका (पुनर्गठन) तथा ग्लासनोस्त (खुलापन) की अवधारणा पेश की।**

2. रूसी क्रांति के बाद विश्व विचारधारा के स्तर पर दो खेमों में विभाजित हो गया। साम्यवादी विश्व एवं पूँजीवादी विश्व । इसके पश्चात् यूरोप भी दो भागों में विभाजित हो गया। पूर्वी यूरोप एवं पश्चिमी यूरोप। धर्मसुधार आंदोलन के पश्चात् और साम्यवादी क्रांति से पहले यूरोप में वैचारिक आधार पर इस तरह का विभाजन नहीं देखा गया था।

> **सोवियत संघ का विघटन दिसम्बर 1991 ई० में हुआ।**

3. द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् पूँजीवाद विश्व तथा सोवियत रूस के बीच शीतयुद्ध की शुरुआत हुई और आगामी चार दशकों तक दोनों खेमों के बीच शस्त्रों की होड़ चलती रही।

> **शीत युद्ध :**
> **यह एक वैचारिक युद्ध था जिसमें पूँजीवादी गुट का नेता संयुक्त राज्य अमेरिका तथा साम्यवादी गुट का नेता सोवियत रूस था।**

4. रूसी क्रांति के पश्चात् आर्थिक आयोजन के रूप में एक नवीन आर्थिक मॉडल आया। आगे पूँजीवादी देशों ने भी परिवर्तित रूप में इस मॉडल को अपना लिया। इस प्रकार स्वयं पूँजीवाद के चरित्र में भी परिवर्तन आ गया।

5. इस क्रांति की सफलता ने एशिया और अफ्रीका में उपनिवेश मुक्ति को भी प्रोत्साहन दिया क्योंकि सोवियत रूस की साम्यवादी सरकार ने एशिया और अफ्रीका के देशों में होने वाले राष्ट्रीय आंदोलन को वैचारिक समर्थन प्रदान किया।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. रूस में कृषक दास प्रथा का अंत कब हुआ ?
   (क) 1861 (ख) 1862
   (ग) 1863 (घ) 1864

2. रूस में जार का अर्थ क्या होता था ?
   (क) पीने का बर्तन (ख) पानी रखने का मिट्टी का पात्र
   (ग) रूस का सामन्त (घ) रूस का सम्राट

3. कार्ल मार्क्स का जन्म कहाँ हुआ था ?
   (क) इंग्लैण्ड (ख) जर्मनी
   (ग) इटली (घ) रूस

4. साम्यवादी शासन का पहला प्रयोग कहाँ हुआ ?
   (क) रूस (ख) जापान
   (ग) चीन (घ) क्यूबा

5. यूटोपियन समाजवादी कौन नहीं था।
   (क) लुई ब्लां (ख) सेट साइमन
   (ग) कार्ल मार्क्स (घ) रॉबर्ट ओवन

6. 'वार एंड पीस' किसकी रचना है ?
   (क) कार्ल मार्क्स (ख) टॉलस्टाय
   (ग) दोस्तोवस्की (घ) ऐंजल्स

7. बोल्शेविक क्रांति कब हुई ?
   (क) फरवरी 1917 (ख) नवंबर 1917
   (ग) अप्रैल 1917 (घ) 1905

8. लाल सेना का गठन किसने किया था ?

(क) कार्ल मार्क्स (ख) स्टालिन

(ग) ट्रॉटस्की (घ) केरेंसकी

9. लेनिन की मृत्यु कब हुई ?

(क) 1921 (ख) 1922

(ग) 1923 (घ) 1924

10. ब्रेस्टलिटोवस्क की संधि किन देशों के बीच हुआ था ?

(क) रूस और इटली (ख) रूस और फ्रांस

(ग) रूस और इंग्लैण्ड (घ) रूस और जर्मनी

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. रूसी क्रांति के समय शासक .... था।
2. बोल्शेविक क्रांति का नेतृत्व .... ने किया था।
3. नई आर्थिक नीति .... ई० में लागू हुआ था।
4. राबर्ट ओवन .... का निवासी था।
5. वैज्ञानिक समाजवाद का जनक .... को माना जाता है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (20 शब्दों में उत्तर दें)

1. पूँजीवाद क्या है?
2. खूनी रविवार क्या है?
3. अक्टूबर क्रांति क्या है?
4. सर्वहारा वर्ग किसे कहते हैं ?
5. क्रांति से पूर्व रूसी किसानों की स्थिति कैसी थी?

लघुउत्तरीय प्रश्न (60 शब्दों में उत्तर दें)

1. रूसी क्रांति के किन्हीं दो कारणों का वर्णन करें ।
2. रूसीकरण की नीति क्रांति हेतु कहाँ तक उत्तरदायी थी?
3. साम्यवाद एक नई आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था थी कैसे ?
4. नई आर्थिक नीति मार्क्सवादी सिद्धांतों के साथ समझौता था कैसे ?
5. प्रथम विश्वयुद्ध में रूस की पराजय क्रांति हेतु मार्ग प्रशस्त किया कैसे ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (150 शब्दों में उत्तर दें)

1. रूसी क्रांति के कारणों की विवेचना करें।
2. नई आर्थिक नीति क्या है ?
3. रूसी क्रांति के प्रभाव की विवेचना करें।
4. कार्ल मार्क्स की जीवनी एवं सिद्धांतों का वर्णन करें।
5. यूटोपियन समाजवादियों के विचारों का वर्णन करें।

सुमेलित करें

(i)	दास कैपिटल	(क)	1953
(ii)	चेका	(ख)	कार्ल मार्क्स
(iii)	नई आर्थिक नीति	(ग)	1883
(iv)	कार्ल मार्क्स की मृत्यु	(घ)	गुप्त पुलिस संगठन
(v)	स्टालिन की मृत्यु	(ङ)	लेनिन

वर्ग परिचर्चा :

1. आज के संदर्भ में समाजवाद एवं साम्यवाद की आवश्यकता पर वर्ग में चर्चा शिक्षक की उपस्थिति में करें।
2. भारतीय शासन प्रणाली में समाजवाद का प्रभाव पर परिचर्चा आयोजित करें।